©2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

आधा गाँव और साम्प्रदायिकता

गोविन्द वर्मा
ग्राम–अहिबरनपुर, पोस्ट–हीरापट्टी,
जिला–आजमगढ़, उत्तर प्रदेश।

आधा गाँव राही मासूम रज़ा का एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में भले ही गंगौली के आधे लोगों की दास्तान है परन्तु यह उपन्यास अपनी सम्पूर्णता में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ता है। आधा गाँव अपने समय के सम्पूर्ण देश को अपने भीतर समेटे हुए है। आधा गाँव उपन्यास को केवल देशविभाजन त्रासदी के चश्मे से देखना इसके साथ - नाइंसाफी होगी। इस उपन्यास का कई दृष्टियों से अध्ययन किया जा सकता है। इस लेख में आधा गाँव उपन्यास के म◌ाध्यम से समाज में व्याप्त साम्प्रदायिकता को समझने की कोशिश की गई है।

हमारे समाज में एक आम धारणा है कि मुसलमान हिंदुस्तान से ज्यादा पाकिस्तान के प्रति आत्मीय होता है जोकि बिलकुल ही निरर्थक बात है, यह राजनीतिज्ञों द्वारा फैलाई गयी एक अफवाह है। इसी प्रकार की हिन्दूमुस्लिम - संबंधी अन्य प्रकार की ओछी हरकतों से वे समाज में साम्प्रदायिकता का जहर घोलने का काम करते हैं। राही मासूम रज़ा नेताओं की इस करतूत को समझते हैं और 'आधा गाँव' में यह स्पष्ट किया है की,"धर्म राष्ट्र नहीं होता। इस्लाम एक धर्म है लेकिन एक राष्ट्र नहीं। राष्ट्र और धर्म एक समझना इतिहास विरोधी समझ एवं मिथ्या चेतना है। इसके आधार पर जो भी राजनीति की जायेगी उसके मानव विरोधी और विघटनकारी परिणाम ही निकलेगें।राही का)" हिंदुस्तान की तलाश :साहित्य, प्रो० कुँवर पाल सिंहसाम्प्रदायिकता जैसी समस्या को राही मासूम (रज़ा इतिहास के तराजू पर तौलकर सन् 1966 ई० में यह बात स्पष्ट कर देते हैं की पाकिस्तान की नींव ही मानव विरोधी व विघटनकारी तत्वों पर रखी गयी है अत: पाकिस्तान का विघटन अवश्य होगा। शायद यह बात राही मासूम रज़ा को भी न मालूम रही हो कि पाकिस्तान का विघटन इतनी जल्दी)1971 ई०हो जायेगा। (

राही मासूम रज़ा जीवन भर साम्प्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष करते रहे। अपने लगभग सभी उपन्यासों में उन्होंने साम्प्रदायिकता के खिलाफ मोर्चा खोल रखा है। इसी कारण उन्हें काफी विरोध का भी सामना करना पड़ता है और कुछ लोगों ने 'अंध राष्ट्र भक्त' की संज्ञा भी दे डाली है। राही मासूम रज़ा को अपने हिन्दुस्तानी होने पर बहुत गर्व है। राही ने एक पत्र में आडवाणी जी को लिखा था कि,"आडवाणी जी आप पाकिस्तानी हैं। पाकिस्तान बनने के बाद) मेरे बाप (सिंध से भारत आये थे।-दादे धुर गंगा के किनारे के रहने वाले हैं। मेरी पहचान एक हिन्दुस्तानी मुसलमान की है। राही गंगा को हमेशा अपनी दूसरी माँ मानते थे। एक माँ वह जिसने जन्म दिया और दूसरी 'गंगा'। उन्होंने वसीयत की थीगंगा के इस बेटे को मृत्यु के बात उसी की गोदी में सुला देना। (जो पूरी नहीं हुई) -

'मुझे ले जाके गाजीपुर में गंगा की गोदी में सुला देना।
वो मेरी माँ है, वह मेरे बदन का जहर पी लेगी।

मगर शायद वतन से दूर, इतनी दूर मौत आए
जहाँ से मुझको गाजीपुर ले जाना न मुमकिन हो
तो फिर मुझको
अगर उस शहर में छोटी सी इक नदी भी बहती हो।
मुझको उसकी गोदी में सुलाकर
उससे कह देना
कि यह गंगा का बेटा आज से तेरे हवाले है।' "(राही का साहित्य हिंदुस्तान की तलाश :, प्रो० कुँवर पाल सिंह(

इस प्रसंग से यह पता चलता है कि राही मासूम रज़ा को किसी से देशभक्ति का प्रमाण पत्र लेने की आवश्यकता नहीं है और उनका इस देश और गंगा के प्रति अटूट लगाव है।वह इस बात से आश्वस्त हैं कि देशभक्ति के लिए धर्म कभी आड़े नहीं आता है।

आधा गाँव उपन्यास में कई ऐसे प्रसंग हैं जहाँ पर जिन घटनाओं या कारणों को लेकर साम्प्रदायिक सौहार्द बूझ के कारण ऐसा नहीं होता है। गंगौ-बिगड़ने जैसा माहौल बन सकता है परन्तु लोगों के आपसी सूझली के लोग दोनों धर्मों का सम्मान करते हैं। एक बार गंगौली में बड़े ताजिये के निकलने पर रास्ते में पड़ने वाली बूढ़ी ब्राह्मणी की झोपड़ी नहीं हटाई गई, इसे ब्राह्मणी बड़ा अपसगुन मानती है और ताजिये का जाकर मानमनौव्वल करती है। वर्तमान समय में -देश के अन्दर सबसे ज्यादा दंगे धार्मिक झांकियों को निकलने को लेकर होते हैं। गंगौली में निकलने वाली ताजिये में सबसे आगे हिन्दू ही लाठी लेकर चलते थे और उन ताजियों को बनाने से लेकर कंधे पर उठाकर चलने वाले गंगौली के हिन्दू ही होते थे। दरअसल यह केवल गंगौली में ही नहीं समस्त भारत में होता था, दोनों कौमों के लोग एकदूसरे के -चढ़ कर हिस्सा लेते थे।-धार्मिक आयोजनों में बढ़

दूसरे से लड़ने के लिए उकसाया जा रहा था तब भी आम जनता इसको -जब विभाजन के दौरान जनता को एक समझ रही थी। फुन्नन मियां जैसा अनपढ़ आदमी कहता है-

"हिन्दू कउनो ना हैं की उनके भ ...ड़कावे में आ जय्यहें।"

भाली जनता जानती है कि उन्हें भड़काया जा रहा है-गाँव की भोली, गाँव में अख़बारों पर विश्वास न करने को कहा जा रहा है। गाँव जवार की जनता कभी बहकावे में आ भी जाती तो जब लाठी चलाने की नौबत आती तब वह -पीछे हट जाती क्योंकि दोनों पक्ष एक-दूसरे को जनतापहचानता रहता था। यही कारण है कि विभाजन के दौरान -अधिकांश दंगे कलकत्ता, लाहौर जैसे बड़े नगरों में हुए न कि गंगौली जैसे गाँवों में।

राही मासूम रज़ा का रचना कर्म बहु आयामी है। इस लेखक ने अपनी समस्त रचनाओं में संकीर्ण विचारों एवं साम्प्रदायिक शक्तियों क ा विरोध किया है। इनमें कबीर जैसी निडरता दिखाई पड़ती हैमस्जिद -आपको मंदिर" -बनाने का अधिकार है तो मुझे यह भी अधिकार है कि जो धार्मिक स्थल देश की जनता को बांटते हों चाहे वह मंदिर हों या मस्जिद हों, मैं उन्हें ढहाने की बात कहूँ।हिंदुस्तान क :राही का साहित्य) "ी तलाश,प्रो० कुँवर पल सिंहकुल (मिलाकर कहा जा सकता है कि वर्तमान समय के राजनीतिज्ञों ने देश में साम्प्रदायिकता के जहर को घोलने का काम किया है, नहीं तो आम जनता का धर्म के प्रति आस्था एवं सम्मान जुड़ा है और अपने समाज के प्रति लगाव है यूँ ही छोटी-छोटी बातों पर उसकी भावना नहीं भड़कती है।